डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा निरंकार देव सेवक की जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी संपन्न

भारतीय बाल साहित्य विश्व के श्रेष्ठ बाल साहित्य के समकक्ष – बालस्वरूप राही

बच्चों के माता–पिताओं को भी पढ़ना चाहिए बाल साहित्य – दिविक रमेश

निरंकार देव सेवक का समग्र मूल्यांकन होना चाहिए – सुधीर विद्यार्थी

नई दिल्ली, 26 नवंबर 2019 । साहित्य अकादेमी द्वारा आज प्रख्यात लेखक एवं बाल साहित्यकार निरंकार देव सेवक की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर 'निरंकार देव सेवक और बाल साहित्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात कवि एवं बाल साहित्यकार बाल स्वरूप राही ने दिया कार्यक्रम में बीज वक्तव्य देने प्रकाश मनु जी को आना था लेकिन दुर्घटनावश चोट लगने के कारण वे नहीं आ सके। अतः उनका बीज वक्तव्य श्याम सुशील द्वारा प्रस्तुत किया गया। बीज वक्तव्य प्रकाश मनु की अनुपस्थिति में पढ़ा गया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में निरंकार देव सेवक की पुत्रवधू एवं प्रख्यात संगीतकार पूनम सेवक विशेष रूप से उपस्थित थीं। स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने दिया।

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए बाल स्वरूप राही ने कहा कि भारतीय बाल साहित्य को हेय दृष्टि से देखने की ज़रूरत नहीं है। भारतीय बाल साहित्य विश्व के किसी भी देश के श्रेष्ठ बाल साहित्य के समकक्ष है। उन्होंने कहा कि बाल साहित्य में दो विशेषताएँ अवश्य होनी चाहिए जिससे कि बाल मन की भावनाएँ और कामनाएँ प्रकट हो सकें। हमें बच्चों के लिए उपदेश देने की बजाय संदेश देने की कोशिश करनी चाहिए। आगे उन्होंने कहा कि सेवक जी की कविताओं में बच्चों की भावनाएँ और कामनाएँ दोनों ही हैं और उनकी कविताओं की एक–एक पंक्ति रसमय है, वे कहीं भी नीरस नहीं होतीं। निरंकार देव सेवक जी की पुत्रवधू ने उनके जीवन से जुड़े कई मार्मिक प्रसंग श्रोताओं से साझा करते हुए उनकी दिनचर्या से जुड़े कई प्रसंगों को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि वे बेहद साधारण जीवन व्यतीत करते थे।

प्रकाश मनु जी ने कहा कि सेवक जी केवल बाल कविताएँ लिखते ही नहीं थे वे बच्चों के सरल, जिज्ञासु मन और बाल कविता के मर्म, दोनों को ही बहुत गहराई से समझते थे। इसीलिए आज़ादी के बाद के कालखंड में वे स्वभावतः बच्चों के सर्वाधिक प्रिय और पसंदीदा कवियों में से थे, जिनकी कविताएँ गाँव–गाँव, गली–गली में गूँजा करती थीं। बच्चे जाने–अनजाने उन्हें गाते–गुनगुनाते थे और आनंदित हो उठते थे। जाने कितनी ही पीढ़ियों के बच्चे सेवक जी की कविताओं के साथ झूम–झूमकर नाचते–गाते हुए बड़े हुए। इन कविताओं से ही उन्होंने जीवन के बड़े–बड़े पाठ सीखे। साथ ही बचपन को आनंद से जीने की कला, नायाब मस्ती और अनोखे रंग–ढंग भी। आगे उन्होंने कहा कि सेवक जी ने अपने युग के अन्य बाल साहित्यकारों की तरह केवल बच्चों के लिए लिखा ही नहीं, बल्कि बाल साहित्य को सही दिशा देने का बड़ा चुनौतीभरा काम भी किया। वे एक बड़े और मूर्धन्य बाल साहित्यकार हैं तो साथ ही बाल साहित्य के दिग्दर्शक और युग–निर्माता भी। और दोनों ही मोरचों पर उनका योगदान लासानी है।

कार्यक्रम के आरंभ में सभी का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि साहित्य अकादेमी बाल साहित्य का महत्त्व भली–भाँति समझती है और उसके विकास के लिए सतत प्रयत्नशील है। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा बाल साहित्य के संवर्धन के लिए किए जा रहे कार्यों का भी ज़िक्र कया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में 'निरंकार देव सेवक एवं बाल कविता' विषय पर विचार–विमर्श हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कवि एवं बाल साहित्यकार दिविक रमेश ने की तथा कमलेश भट्ट 'कमल', जगदीश व्योम एवं रजनीकांत शुक्ल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय भाषण में दिविक रमेश ने कहा कि बाल साहित्य बच्चों की आवाज है और हमें उसका उसी तरह से सम्मान और प्यार करना चाहिए जैसाकि हम बच्चों को करते हैं। उन्होंने सेवक जी द्वारा बच्चों के मनोविज्ञान को समझकर लिखी गई कविताओं की प्रशंसा करते हुए कहा कि बच्चे हमेशा स्वतंत्रता प्रिय होते हैं अतः हम बाल साहित्यकारों को उनकी इस प्रवृत्ति का सम्मान करते हुए ही उनके लिए कविताएँ लिखनी चाहिए। उन्होंने बच्चों के माता पिताओं से भी बाल साहित्य पढ़ने की अपील करते हुए कहा कि इससे जहाँ वे अपने बच्चों के मनोविज्ञान को अच्छे से समझ पाएँगे साथ ही उनके लिए अच्छे बाल साहित्य का चयन भी कर पाएँगे।

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में 'निरंकार देव सेवक की विचार दृष्टि एवं बाल साहित्य' विषय पर विचार–विमर्श हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लेखक सुधीर विद्यार्थी ने की और शकुंतला कालरा, उषा यादव एवं श्याम सुशील ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र के अध्यक्ष सुधीर विद्यार्थी ने कहा कि निरंकार देव सेवक का समग्र मूल्यांकन होना चाहिए। हमने उनके बाल साहित्य की तो चर्चा की है लेकिन उनके द्वारा लिखे गए महत्त्वपूर्ण प्रौढ़ साहित्य को अनदेखा किया है। उनके द्वारा लिखी गई कविताएँ, संपादकीय तथा अन्य कॉलम भी अद्वितीय हैं और उनपर विचार किया जाना ज़रूरी है।

कार्यक्रम में कई महत्त्वपूर्ण बाल साहित्यकार और लेखक उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक अनुपम तिवारी ने किया।

(के. श्रीनिवासराव)

निरंका

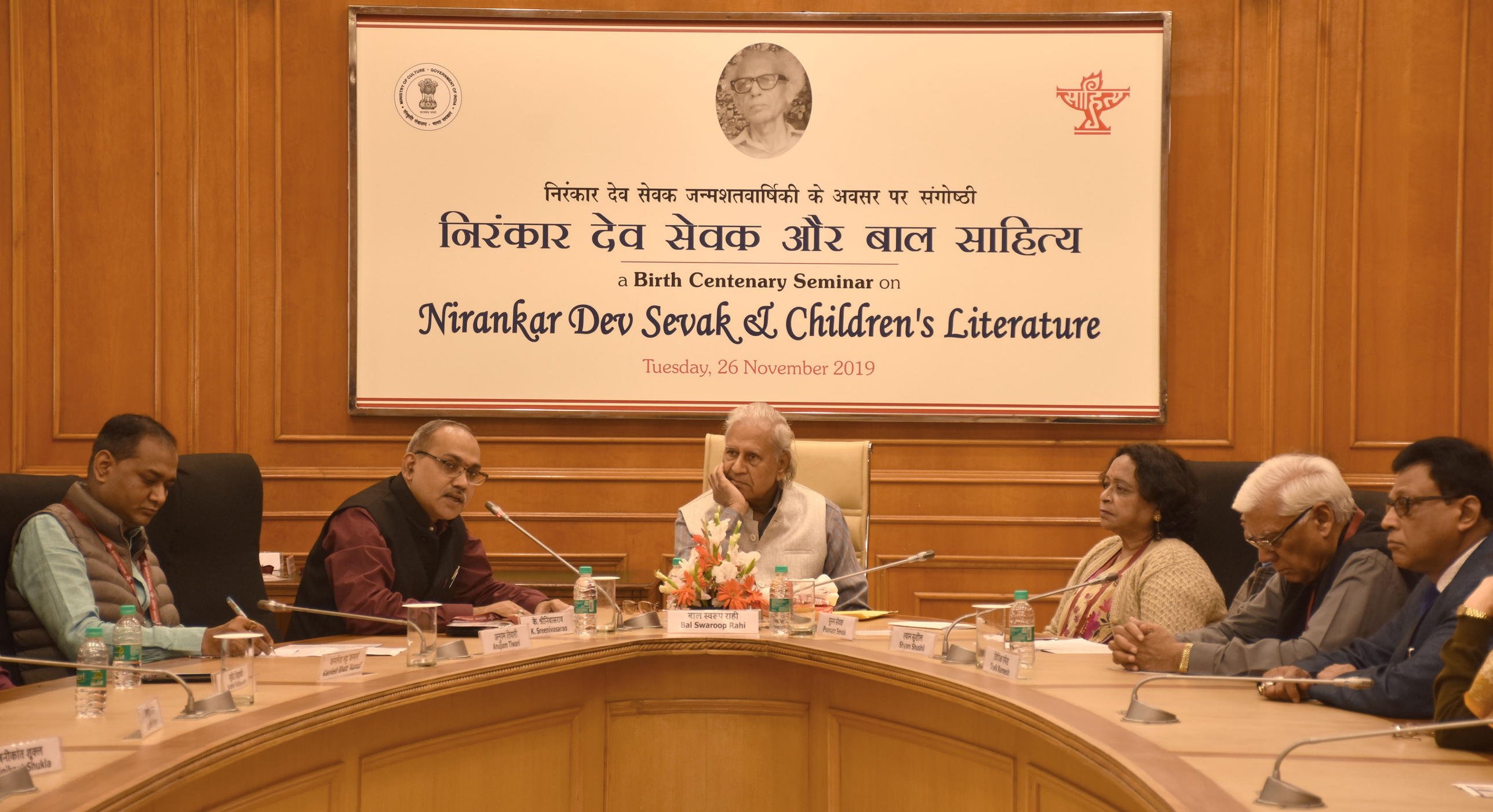

निरंकार देव सेवक जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर संगोष्ठी
निरंकार देव सेवक और बाल साहित्य
a Birth Centenary Seminar on
Niranker Dev Sevak & Children's Literature
Tuesday, 26 November 2019
साहित्य
बाल स्वरूप राही
Bal Swaroop Rahi
K. Sreenivasarao
Anupam Tiwari
Poonam Sevak
Shyam Sushil

निरंकार देव सेवक जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर संगोष्ठी
निरंकार देव सेवक और बाल साहित्य
a Birth Centenary Seminar on
Nirankar Dev Sevak & Children's Literature
Tuesday, 26 November 2019
बाल स्वरूप राही
Bal Swaroop Rahi

निरंकार देव सेवक जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर संगोष्ठी
निरंकार देव सेवक और बाल साहित्य
a Birth Centenary Seminar on
Nirankar Dev Sevak & Children's Literature
Tuesday, 26 November 2019
कमलेश भट्ट कमल
Kamlesh Bhatt Kamal
दिविक रमेश
Divik Ramesh